==========

AVYAKT MURLI

15 / 12 / 79

==========

5-12-79 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

"विदेशी बच्चों के साथ अव्यक्त बाप-दादा की मुलाकात"

आज सभी पदमापदम भाग्यशाली बच्चों को बाप-दादा भी देख हर्षित हो रहे हैं। एक-एक विश्व के शो केस के अन्दर अमूल्य रत्न हैं। हरेक रत्न अपनी-अपनी वैल्यू यथा-शक्ति जानते हैं। लेकिन बाप-दादा सदा सर्व बच्चों की सम्पन्न स्टेज ही देखते हैं। वर्तमान फरिश्ता रूप और भविष्य देवता रूप, मध्य का पूज्य रूप - तीनों ही रूप आदि, मध्य और अन्त का देखते हुए हरेक रत्न की वैल्यू को जानते हैं। हरेक रत्न कोटों में से कोई और कोई में भी कोई है। ऐसे ही अपने को समझते हो ना? एक तरफ विश्व की कोटों आत्मायें रखो ओर दूसरी तरफ एक अपने को रखो तो कोटों से भी ज्यादा आप हरेक का वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ है। इतना नशा सदा रहता है? आज दिन तक भी आपके पूज्य स्वरूप देवी वा देवता के रूप की भक्त लोग पूजा कर रहे हैं। आपके ही जड़ चित्रों में चैतन्य देवताओं का आह्वान कर रहे हैं। पुकार रहे हैं, आओ, आ करके अशान्ति से छुड़ाओ। भकतों की पुकार, अपनी भविष्य में होने वाली प्रजा का भी आह्वान सुनाई देता है?

आज की राजनीति की हलचल को देख आप विश्व के महाराजन महारानियों को व वैकुण्ठ रामराज्य को सब याद कर रहे हैं कि अब वह राज्य चाहिए। रामराज्य में व सतयुगी वैकुण्ठ में आप सब बाप के साथ-साथ राज्य-अधिकारी हो ना। तो आप अधिकारियों को आपकी प्रजा आह्वान कर रही है कि फिर से वह राज्य लाओ। आप सब श्रेष्ठ आत्माओं को उनकी आवाज़ नहीं पहुँचती है? सब चिल्ला रहे हैं, कोई भूख से चिल्ला रहे हैं, कोई मँहगाई से चिल्ला रहे हैं, कोई तन के रोग से चिल्ला रहे हैं, कोई मन की अशान्ति से चिल्ला रहे हैं, कोई टैक्स से चिल्ला रहे हैं, कोई परिवार की समस्याओं से चिल्ला रहे हैं, कोई अपनी कुर्सी की हलचल के कारण चिल्ला रहे हैं, बड़े-बड़े राज्य-अधिकारी एक-दूसरे से भयभीत होकर चिल्ला रहे हैं, छोटे-छोटे बच्चे पढ़ाई के बोझ से चिल्ला रहे हैं। छोटे से बड़े, सब चिल्ला रहे हैं। चारों ओर का चिल्लाना आप सबके कानों तक पहुँचता है? ऐसे समय पर बाप के साथ-साथ आप सब भी टॉवर ऑफ पीस हो। सबकी नज़र टॉवर ऑफ पीस की तरफ जा रही है। सब देख रहे हैं - हा-हाकार के बाद जय-जयकार कब होती है। तो सब टॉवर ऑफ पीस बताओ, कब जय-जयकार कर रहे हो? क्योंकि बाप-दादा ने साकार रूप में निमित्त आप बच्चों को ही रखा है। तो हे साकारी फरिश्ते, कब अपने फरिश्ते रूप से विश्व के दु:ख दूर कर सुखधाम बनायेंगे। तैयार हो?

अनूठा प्रसाद

विदेशी तो लास्ट इज़ फास्ट वाले हैं ना। फास्ट गति से कब सर्व की सद्गति कर रहे हो? एवररेडी हो? बाप-दादा सबको बच्चों के तरफ ही इशारा करते हैं। शक्तियों की पूजा ज्यादा है। दो तरफ लम्बी लाइन लगती है। पाण्डवों की यादगार हनुमान के पास और शक्तियों की तरफ से वैष्णव देवी के पास - दोनों के पास लम्बी लाइन लगती है। दिन-प्रतिदिन लाइन लम्बी होती जा रही है। तो सर्व भक्तों को भक्ति का फल, गति-सद्गति देने वाले हो ना? तो सदा अपने को मास्टर गति-सद्गति दाता समझ, गति और सद्गति का प्रसाद भक्तों को बाँटों, प्रसाद बाँटना आता है। टोली बाँटने का अभ्यास तो ही ही गया है, अब यह प्रसाद बाँटना है।

आज तो विशेष विदेशियों से मिलने आये हैं। आज अमृतबेले का दृश्य सुनाया कि विश्व में क्या देखा। एक चिल्लाना, दूसरा चलाना। एक तरफ चिल्ला रहे हैं और दूसरे तरफ सब कार्य को धक्के से चला रहे हैं। सब बातों में यह सोचते हैं कि चलाना ही है। जैसे कोई स्वयं नहीं चल पाता तो धक्के से व आार्टिफिशियल पहिये लगाकर चलाते हैं। आजकल की भाषा में - हर कार्य में जब तक किसी-न-किसी साधन के पहिये नहीं लगाते तब तक कार्य नहीं चलता। तो पहिये लगाने का सीज़न है? फैशन है। इससे क्या सिद्ध होता है कि वैसे कार्य नहीं चल सकता लेकिन धक्के से चला रहे हैं अथवा पहिये लगाकर चला रहे हैं। तो आज का समाचार था - विश्व में चिल्लाना और काम व जीवन को चलाना। इसलिए आजकल गवर्नमेन्ट भी काम चलाऊ है। तो चलाना और चिल्लाना, यही

आज के विश्व की हालत है। कोई चिल्ला रहा है कोई चला रहा है। तो सुना, संसार समाचार।

विदेशियों में भी विशेषतायें हैं तब ही बाप-दादा ने दूर-दूर देशों से भी अपने बच्चों को ढूँढ लिया है। कभी स्वप्न में भी सोचा था कि क्या हम ऐसे बाप के सिकीलधे बनेंगे? लेकिन बाप तो बच्चों को कोने-कोने से भी छाँटकर अपने परिवार के गुलदस्ते में लगा देते हैं। तो सब भिन्न-भिन्न स्थान से आये हुए एक ही ब्राह्मण परिवार के गुलदस्ते के वैराइटी पुष्प हो।

विदेशियों की विशेषता डबल विदेशी बच्चों को ड्रामा अनुसार विशेष लिफ्ट भी मिली हुई है। जिस लिफ्ट के आधार से लास्ट सो फास्ट अच्छे ही जा रहे हैं। वह लिफ्ट की गिफ्ट कौन-सी है? विदेशियों की विशेषता अर्थात् विदेशियों को विशेष लिफ्ट इसलिए मिली हुई है जो विदेश में सुख के साधन सब प्रकार के भोगकर अब थके हुए हैं और भारतवासी अभी शुरू कर रहे हैं। तो विदेशियों का उन अल्पकाल के साधनों से जैसे जैसे किसी का पेट भर जाता है ना तो उसके आगे कुछ भी रखो, आसक्ति नहीं जाती, वैभवों से, वस्तुओ से, अल्काल के सुखों से जी भर चुका है। इसलिए एक तरफ से किनारा सहज हो चुका था और जिसकी आवश्यकता थी वह सहारा मिल गया। इसलिए सहज ही एक बाप दूसरा न कोई, इस स्थिति का अनुभव कर रहे हो। त्याग किया जरूर है लेकिन जी भरने के बाद त्याग किया है। विदेशियों को यह लिफ्ट है जो पहले से ही बुद्धि किनारे हो

गई है। और सहारे को ढूँढने की वायुमण्डल में शुरूआत हो गई है, इसलिए भारतवासियों को छोड़ने में मेहनत लगती और विदेशियों को छोड़ने में मेहनत नहीं लगती। सहज ही त्याग हो जाता। इसलिए भारतवासियों का छोड़ने में हृदय विदीर्ण होता है। विदेशियों का उछल से, एक धक से, छोड़ा और छूटा। दूसरी बात विदेशियों के संस्कार स्वभाव में भी यह भरा हुआ है कि जो सोचा वह किया। डोन्ट केयर हैं। जो सोचा वह करना ही है। सोचने वाले नहीं कि यह क्या कहेंगे, वह क्या कहेंगे! लोक मर्यादा से पहले ही पार हैं। इसलिए भारतवासियों से ज्यादा पुरूषार्थ में सहज और तीव्र जाते हैं। उनको लोक मर्यादा ज्यादा होती है। डबल विदेशियों की लोक मर्यादा पहले ही छूटी हुई है। आधे नाते पहले ही टूटे हुए हैं इसलिए लास्ट सो फास्ट जाते हैं। समझा, विदेशियों की ड्रामा अनुसार विशेषता हैं। अज्ञान की बातें हैं। लेकिन ड्रामा में यह संस्कार परिवर्तन होने में सहज साधन बन गये हैं - इसलिए विदेशियों को सहज होता है। विदेशी नष्टोमोहा होने में होशियार हैं, इण्डियन भी विदेश में रहकर विदेश के वातावरण में तो आ जाते हैं ना। विदेशी जम्प लगाने में होशियार हो गए हैं। समझा, विदेशियों की विशेषता?

आस्ट्रेलिया पार्टी - आस्ट्रेलिया वालों ने बहुत अच्छी सेवा की वृद्धि की है। बिछुड़ी हुई आत्माओं को बाप से मिलाने वाले रूहानी सेवाधारी हो। एक-एक बाप के समीप आने और लाने वाला रत्न हैं। बाप-दादा भी ऐसे रूहानी सेवाधारियों को देख हर्षित होते हैं। नये-नये भी पुराने लगते हैं क्योंकि

कल्प-कल्प के अधिकारी हैं। आस्ट्रेलिया वालों की विशेषता है - बिना कोई विशेष सहयोग के भी अपने पाँव पर खड़े होकर बाप के सम्बन्ध, सम्पर्क के आधार पर सेवा की, वृद्धि की तो सभी सदा बाप के समीप अपने को अनुभव करते हो? पाण्डव सेना ज्यादा है या शक्तियाँ? (शक्तियाँ) शक्तियों का झण्डा ऊंचा है। मेहनत पाण्डवों ने की है और झण्डा शक्तियों को दिया है। यही अच्छा है क्योंकि शक्तियाँ हैं गाइड और पाण्डव हैं गार्ड। गार्ड खुद पीछे होकर गाइड को आगे रखते हैं। तो शक्तियों गाइड बनकर सबको रास्ता दिखा रही हो? शक्तियों हो या कुमारी? शक्तियों की विशेषता है - सदा मायाजीत। माया अर्थात् वार करने वाले को अपनी सवारी बनाने वाली। ऐसे हो ना।

समान बनना ही साथ रहना है

बाप-दादा ने तो विदेशी बच्चों को आह्वान 10-12 वर्ष पहले से ही किया है। इतनी स्वीट आत्मायें हो। सभी सदा बाप-दादा द्वारा प्राप्त हुए सुख-शान्ति वा आनन्द के झूले में झूलते रहते हो ना? जो सदा झूले में झूलने वाले हैं वह भविष्य में भी साकार रूप के भिन्न रूप के साथ झूले में झूलते हैं। तो सभी श्रीकृष्ण के साथ झूलेंगे ना! जब बाप के समान बनेंगे तभी बाप के साथ झूले में झूल सकेंगे। नहीं तो दूर बैठे देखने वाले बन जायेंगे! सदा साथ रहने वाले वहाँ भी साथ-साथ झूलते हैं। हरेक ने स्वर्ग जाने की टिकट बुक कर दी हैं! कौन-सी क्लास की टिकट बुक की है? एयरकन्डीशन की टिकट किन्हें मिलेगी? जो यहाँ हर कन्डीशन में सेफ

रहेंगे। कोई भी परिस्थिति आ जाए, कैसी भी समस्यायें आ जाएं लेकिन हर समस्या को सेकेण्ड में पार करने वाले। एयरकन्डीशन की टिकट बुक कराने के लिए पहले यह सर्टािफकेट चाहिए। जैसे उस टिकट के लिए पैसे देते हो। ऐसे यहाँ "सदा विजयी" बनने की मनी चाहिए - जिससे टिकट मिल सके। बहुत मेहनत करके मनी इकट्ठी करके यहाँ आये हो ना! यह मनी इकट्ठी करना उससे भी सहज है। जो सदा बाप के साथ रहते हैं उसकी हर सेकेण्ड में बहुत ही कमाई जमा होती रहती है। तो इतने समय में कितनी कमाई जमा कर ली है? अच्छा, नया प्लैन क्या बनाया है? शक्तियों और पाण्डवों का संगठन अच्छा है। आपस में निर्विघ्न हो, स्नेही और सहयोगी होकर चलते हो? कोई खिटखिट तो नहीं होती? और भी ज्यादा से ज्यादा निर्विघ्न सेवाकेन्द्र बनाओ, तब इनाम मिलेगा। ज्यादा सेन्टर भी हो और निर्विघ्न भी हों? (बापदादा हमारे पास आस्ट्रेलिया में आयेंगे?) बाप-दादा तो रोज़ चक्र लगाते हैं। आप सोचो जब बच्चे बाप को याद करते हैं तो बाप कैसे याद का रिटर्न नही देंगे? बाप-दादा सदा अमृतबेले हर बच्चे की सम्भाल करने के लिए, देखने के लिए विश्व-भ्रमण करते हैं। आप रूह-रूहान नहीं करते हो? आते हैं तब तो रूह-रूहान करते हो! रोज़ रूह-रूहान करते हो या कभी-कभी। एक होता है बैठना और दूसरा होता है - मिलन मनाना, तो बैठते हो लेकिन पॉवरफुल स्टेज पर बैठो तो सदा समीप का अनुभव करेंगे।

जादू का शब्द - बाबा

अभी तो जब तक हैं तब तक मिलते रहेंगे। बाबा कहा और साथ का अनुभव किया। कोई भी बात आये, सेकेण्ड में बाबा कहा और साथ का अनुभव कर लिया। यह बाबा शब्द ही जादू का शब्द है। तो जैसे जादू की रिंग या जादू की कोई चीज़ अपने साथ रखते हैं, वैसे 'बाबा' शब्द अपने साथ रखो। तो कभी भी किसी भी कार्य में कोई भी मुश्किल नहीं आयेगी। अगर कोई बात हो भी जाए तो 'बाबा' शब्द याद करने और कराने से निर्विघ्न हो जायेंगे। बाबा-बाबा का महामन्त्र सदा स्मृति में रखो तो सदा ऐसे अनुभव करेंगे छत्रछाया के नीचे चल रहे हैं।

मौरीशियस - सदा बाप द्वारा मिले हुए खज़ानों से खेलते रहते हो ना? जो लाडले और सिकीलधे होते हैं, वे सदा रतनों से खेलते हैं। तो आप सबको भी बाप-दादा द्वारा अखुट ज्ञान रत्न प्राप्त हुए हैं, उसी अखुट खज़ाने में खेलते रहते हो? इन्ही रतनों से खेलने और दूसरों को भी मालामाल करने में सदा बिज़ी रहते हो ना? यही कार्य है ना? बाकी प्रवृत्ति तो निमित्त मात्र है। क्योंकि वर्तमान समय आप सब मरजीवा ब्राह्मण जीवन के बने हो। ब्राह्मण जीवन का कर्त्तव्य है - सुनना और सुनाना। यही निजी कार्य है। (बाँधेलियाँ हैं) बाँधेलिया तो प्रवृत्ति में रहते भी निवृत्त रहती है। हर घड़ी लगन रहती है कि किस घड़ी निर्बन्धन बन बाप से मिलें। तन वहाँ है लेकिन मन बाप के पास रहता है। परतन्त्र तन के हैं मन के तो नहीं है ना। तन को कितने भी तालों में रखें, मन को तो ताला नहीं लगा सकते। अगर मायाजीत हैं तो मन स्वतन्त्र है। बाँधेलियाँ अपनी वृत्ति द्वारा, शुद्ध

संकल्प द्वारा, विश्व के वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकती हैं। बाँधेलियों को इस सेवा का बहुत बड़ा चान्स है। आजकल मन्सा सेवा ही चाहिए क्योंकि विश्व को आवश्यकता है - मन की शान्ति की। तो मन्सा द्वारा शान्ति के वायब्रेशन्स फैला सकती हो। शान्ति के सागर बाप की याद में इसी संकल्प में रहना, यही मन्सा सेवा है। ऑटोमेटिक शान्ति की किरणें फैलती रहेगी। तो शान्ति का दान देने वाली, महादानी हो न?

जहाँ बाप साथ है, वहाँ कोई कुछ भी नहीं कर सकता। अगर कोई थोड़ा शोर करते हैं तो भी धीरे-धीरे ठण्डे हो जायेंगे। जैसे दीपावली के मच्छर निकलते हैं और समाप्त हो जाते हैं ना। आप सागर के बच्चे सागर हो, सारे विश्व को सच्चा आर्य बनाने वाले हो - तो कोई कर ही क्या सकता है। तालाब सागर में समाकर समाप्त हो जायेंगे। जितना आप लोग बाप को याद करते हो, बाप आपको पदमगुणा याद करते हैं। इसलिए रोज़ याद का रिटर्न देने के लिए चक्र लगाते हैं। बच्चे भले सोये भी पड़े हों, बाप सर्व बच्चों की देख-रेख का अपना कार्य सदा ही करते हैं। कोई कैच करते हैं कोई नहीं करते हैं, वह हुआ बच्चों का पुरूषार्थ। उसी समय कैच करो तो बहुत कुछ अनुभव कर सकते हो। सारे दिन के लिए एक खुराक मिल जायेगी।

पेपर आना अर्थात् अनुभवी बनाना अर्थात् सदा के लिए विघ्न-विनाशक की डिग्री लेना। इसलिए जब पेपर आता है तो समझना चाहिए कि क्लास

आगे बढ़ गये। बापदादा सदा बच्चों की रक्षा करते हैं, इसलिए सदा उसी छत्रछाया में रहो।

==========

QUIZ QUESTIONS

==========

प्रश्न 1 :- बाबा ने कौन सा प्रसाद बाँटने को कहा है?

प्रश्न 2 :- बाबा ने मुरली में क्या संसार समाचार सुनाया?

प्रश्न 3 :- डबल फॉरेनर्स को लिफ्ट कैसे मिली हुई है?

प्रश्न 4 :- विदेशी भारतवासियों से ज्यादा पुरूषार्थ में सहज और तीव्र क्यों जाते हैं?

प्रश्न 5 :- मुरली में बाबा ने "बाबा" शब्द की क्या विशेषतायें बताई है?

FILL IN THE BLANKS:-

(रामराज्य, अनुभवी, विघ्न-विनाशक, मायाजीत, समान, सतयुगी, सम्पन्न)

1 बाप-दादा सदा सर्व बच्चों की ____ स्टेज ही देखते हैं।

2 ____ में व ____ वैकुण्ठ में आप सब बाप के साथ-साथ राज्य-अधिकारी हो ना।

3 शक्तियों की विशेषता है - सदा ____।

4 जब बाप के ____ बनेंगे तभी बाप के साथ झूले में झूल सकेंगे।

5 पेपर आना अर्थात् ____ बनाना अर्थात् सदा के लिए ____ की डिग्री लेना।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- सब भिन्न-भिन्न स्थान से आये हुए एक ही दैवी परिवार के गुलदस्ते के वैराइटी पुष्प हो।

2 :- सदा झूले में झूलने वाले हैं वह भविष्य में भी साकार रूप के भिन्न रूप के साथ झूले में झूलते हैं।

3:- शान्ति के सागर बाप की याद में इसी संकल्प में रहना, यही समाज सेवा है।

4 :- बच्चे भले सोये भी पड़े हों, बाप अपने बच्चों की देख-रेख का अपना कार्य सदा ही करते हैं।

5 :- बापदादा सदा बच्चों की रक्षा करते हैं, इसलिए सदा उसी छत्रछाया में रहो।

==========

QUIZ ANSWERS

==========

प्रश्न 1 :- बाबा ने कौन सा प्रसाद बाँटने को कहा है?

उत्तर 1 :- बाबा ने कहा है कि :-

❶ सदा अपने को मास्टर गति-सद्गति दाता समझ, गति और सद्गति का प्रसाद भक्तों को बाँटों, प्रसाद बाँटना आता है।

❷ टोली बाँटने का अभ्यास तो ही ही गया है, अब यह प्रसाद बाँटना है।

प्रश्न 2 :- बाबा ने मुरली में क्या संसार समाचार सुनाया?

उत्तर 2 :- बाबा ने सुनाया कि :-

❶ आज का समाचार था - विश्व में चिल्लाना और काम व जीवन को चलाना। इसलिए आजकल गवर्नमेन्ट भी काम चलाऊ है।

❷ तो चलाना और चिल्लाना, यही आज के विश्व की हालत है।

❸ कोई चिल्ला रहा है कोई चला रहा है। तो सुना, संसार समाचार।

प्रश्न 3 :- डबल फॉरेनर्स को लिफ्ट कैसे मिली हुई है?

उत्तर 3 :- डबल फॉरेनर्स अर्थात विदेशियों को विशेष लिफ्ट मिली हुई है क्योंकि

❶ जो विदेश में सुख के साधन सब प्रकार के भोगकर अब थके हुए हैं और भारतवासी अभी शुरू कर रहे हैं।

❷ तो विदेशियों का उन अल्पकाल के साधनों से जैसे जैसे किसी का पेट भर जाता है ना तो उसके आगे कुछ भी रखो, आसक्ति नहीं जाती, वैभवों से, वस्तुओ से, अल्काल के सुखों से जी भर चुका है।

प्रश्न 4 :- विदेशी भारतवासियों से ज्यादा पुरूषार्थ में सहज और तीव्र क्यों जाते हैं?

उत्तर :- बाबा ने इसका कारण बताया है कि:-

❶ विदेशियों के संस्कार स्वभाव में भी यह भरा हुआ है कि जो सोचा वह किया। डोन्ट केयर हैं।

❷ जो सोचा वह करना ही है। सोचने वाले नहीं कि यह क्या कहेंगे, वह क्या कहेंगे! लोक मर्यादा से पहले ही पार हैं। इसलिए भारतवासियों से ज्यादा पुरूषार्थ में सहज और तीव्र जाते हैं।

प्रश्न 5 :- मुरली में बाबा ने "बाबा" शब्द की क्या विशेषतायें बताई है?

उत्तर 5 :- बाबा ने बताया है कि :-

❶ बाबा कहा और साथ का अनुभव किया।

❷ कोई भी बात आये, सेकेण्ड में बाबा कहा और साथ का अनुभव कर लिया। यह बाबा शब्द ही जादू का शब्द है। तो जैसे जादू की रिंग या जादू की कोई चीज़ अपने साथ रखते हैं, वैसे 'बाबा' शब्द अपने साथ रखो। तो कभी भी किसी भी कार्य में कोई भी मुश्किल नहीं आयेगी।

❸ अगर कोई बात हो भी जाए तो 'बाबा' शब्द याद करने और कराने से निर्विघ्न हो जायेंगे। बाबा-बाबा का महामन्त्र सदा स्मृति में रखो तो सदा ऐसे अनुभव करेंगे छत्रछाया के नीचे चल रहे हैं।

FILL IN THE BLANKS:-

(रामराज्य, अनुभवी, विघ्न-विनाशक, मायाजीत, समान, सतयुगी, सम्पन्न)

1 बाप-दादा सदा सर्व बच्चों की ____ स्टेज ही देखते हैं।

सम्पन्न

2 ____ में व ____ वैकुण्ठ में आप सब बाप के साथ-साथ राज्य-अधिकारी हो ना।

रामराज्य / सतयुगी

3 शक्तियों की विशेषता है - सदा ____।

मायाजीत

4 जब बाप के ____ बनेंगे तभी बाप के साथ झूले में झूल सकेंगे।

समान

5 पेपर आना अर्थात् ____ बनाना अर्थात् सदा के लिए ____ की डिग्री लेना।

अनुभवी / विघ्न-विनाशक

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:- 【✖】 【✔】

1 :- सब भिन्न-भिन्न स्थान से आये हुए एक ही दैवी परिवार के गुलदस्ते के वैराइटी पुष्प हो। 【✖】

सब भिन्न-भिन्न स्थान से आये हुए एक ही ब्राह्मण परिवार के गुलदस्ते के वैराइटी पुष्प हो।

2 :- सदा झूले में झूलने वाले हैं वह भविष्य में भी साकार रूप के भिन्न रूप के साथ झूले में झूलते हैं। 【✔】

3 :- शान्ति के सागर बाप की याद में इसी संकल्प में रहना, यही समाज सेवा है। 【✖】

शान्ति के सागर बाप की याद में इसी संकल्प में रहना, यही मन्सा सेवा है।

4 :- बच्चे भले सोये भी पड़े हों, बाप अपने बच्चों की देख-रेख का अपना कार्य सदा ही करते हैं। 【✖】

बच्चे भले सोये भी पड़े हों, बाप सर्व बच्चों की देख-रेख का अपना कार्य सदा ही करते हैं।

5 :- बापदादा सदा बच्चों की रक्षा करते हैं, इसलिए सदा उसी छत्रछाया में रहो। 【✔】